Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

पं. दीनदयाल उपाध्याय एकात्मक मानववाद के द्रष्टा और भारतीय जनसंघ के महामंत्री एवं अध्यक्ष का चिन्तन विमर्श

डॉ. जगदीश प्रसाद जाट:
एसोसिएट प्रोफेसर, स्व: लक्ष्मी कुमारी बधाला गर्ल्स पी.जी. कॉलेज
गोविन्दगढ़, चौमूँ (जयपुरम्)

सारांश– दीनदयाल उपाध्याय 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध के महापुरूष हैं, जब विश्व में अनेक विचार परम्पराएं बहुत प्रखरता से प्रचलित थीं। सोलहवीं शताब्दी के यूरोपीय पुनर्जागरण के बाद की चार शताब्दियों में विचारों ने एक वैश्विक आयाम ग्रहण कर लिया था। अब दृश्यमान विश्व कोई अबूझ पहेली नहीं रह गया था। साहसिक विश्वयात्रियों ने भू–पटल की परिक्रमा कर डाली थी। विज्ञानवाद, भौतिकतावाद एवं मानववाद ने ईश्वर की रहस्यमय सत्ता को एक चुनौती दे दी थी। रहस्यात्मकता पर विज्ञान ने चोट की, श्रद्धामूलक आस्थाओं को तर्क ने हिला दिया तथा अब भगवत्कृपा के स्थान पर विवेक का भरोसा हो चला था। "थियोक्रेसी' को चुनौती देते हुए सैक्युलरिज्म, लोकतंत्रात्मक व्यक्तिवाद व समाजवाद की धारणाएं प्रबल हो गई थीं। यूरोप का कायापलट हो गया था।

भगवत्कृपा व भगवद्भय से मुक्त मानव ने, प्राकृत मानव ने प्रकृति विजय एवं विश्व विजय के अभियान संयोजित किए। साहसपूर्वक खोज लिए गए नए-नए भू-प्रदेशों पर यूरोपीय साम्राज्यों का निर्माण हुआ। बीसवीं सदी इन साम्राज्यों को चुनौती की सदी थी। राष्ट्रवाद साम्राज्यवाद पर प्रहारक बन गया था।

पश्चिम का ज्ञान-विज्ञान पश्चिम के साम्राज्यवाद के माध्यम से ही एशिया व अफ्रीका के महाद्वीपों में पहुंचा। पश्चिम के संपर्क से इन समाजों की चिंतनधारा निर्णायक रूप से प्रभावित हुई; लेकिन एशियाई राष्ट्रवादी मानस पश्चिमी साम्राज्यवाद के साथ-साथ पश्चिमी ज्ञान की प्रभुता को भी स्वीकार करना अपने स्वाभिमान पर चोट समझता था। अतः उसने पश्चिम के ज्ञान को नकारा। दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राष्ट्रवाद की इसी धारा की उपज थे।

उपाध्याय ने लगभग दो दशकों के अध्ययन व अनुभव के बाद अपनी विचारधारा को 'एकात्म मानववाद' के नाम से भारतीय जनसंघ के 'सिद्धांत और नीति' प्रलेख में उद्घोषित किया। उसकी प्रस्तावना में वे शंकराचार्य व चाणक्य का स्मरण करते हुए कहते हैं :

"आज भारत के इतिहास में क्रांति लाने वाले दो पुरूषों की याद आती है। एक वह, कि जब जगद्गुरु शंकराचार्य सनातन बौद्धिक धर्म का संदेश लेकर देश में व्याप्त अनाचार समाप्त करने चले थे और दूसरा वह, कि जब अर्थशास्त्र धारणा का उत्तरदायित्व लेकर संघ राज्यों (त्मचनइसपबे) में बिखरी राष्ट्रीय शक्ति को संगठित कर साम्राज्य की स्थापना करने चाणक्य चले थे। आज इस प्रारूप को प्रस्तुत करते समय वैसा ही तीसरा महत्वपूर्ण प्रसंग आया है, जबकि विदेशी धारणाओं के प्रतिबिंब पर आधारित मानव संबंधी अधूरे व अपुष्ट विचारों के मुकाबले विशुद्ध भारतीय विचारों पर आधारित मानव कल्याण का सम्पूर्ण विचार 'एकात्म मानववाद' के रूप में सुपुष्ट भारतीय दृष्टिकोण को नए सिरे से सूत्रबद्ध करने का काम हम प्रारंभ कर रहे हैं।"

दीनदयाल उपाध्याय भारतीय विचार परम्परा में शांकर वेदांत, कौटिल्य अर्थशास्त्र व स्वयं द्वारा निरूपित 'एकात्म मानववपाद' को, एक नव 'प्रस्थानत्रयी' की स्थापना करते हैं।

प्राचीन 'प्रस्थानत्रयी' के अंतर्गत एकादश उपनिषद्, श्रीमद्भागवद्गीता व व्यास कृत ब्रह्मसूत्र की गणना की जाती है।

दीनदयाल उपाध्याय को दलीय तथा तात्कालिकता के दायरों से मुक्त होकर चिंतन प्रस्तुत करने का अवसर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वार्षिक संघ शिक्षा वर्गों में प्राप्त होता था। उनकी दार्शनिक अभिधारणाओं का इन वर्गों के अवसरों पर दिए गए 'बौद्धिकवर्गों में क्रमशः परिपाक होता चला गया। जून 1964 में राजस्थान के उदयपुर संघ शिक्षा वर्ग में उन्होंने प्रथमतः एकात्म मानववाद की तत्व मीमांसा की। भारतीय जनसंघ के 'कार्यकर्ता अभ्यास वर्गों' का भी वे इस दृष्टि से उपयोग करते थे। इन शिक्षावर्गों के माध्यम से परिपक्व हुआ उनका विचार-दर्शन कुछ-कुछ क्रमबद्धता के साथ दो अवसरों पर प्रकट हुआ। प्रथम 11 अगस्त से 15 अगस्त, 1964 को भारतीय जनसंघ का प्रशिक्षण शिविर, जो ग्वालियर में सम्पन्न हुआ था, उसमें उपाध्याय ने भारतीय जनसंघ के लिए 'सिद्धांत और नीति' पुस्तक का प्रारूप प्रस्तुत किया था। इसी प्रारूप को जनवरी 1965 में विजयवाड़ा अधिवेशन में जनसंघ ने इसे अपना विचार घोषित किया। द्वितीय, 22 से 25 अप्रैल 1965 को मुम्बई में दीनदयाल उपाध्याय ने अपने 'एकात्म मानववाद' चिंतन पर लगातार चार भाषण दिए। लेकिन उनके दर्शन का बड़ा भाग संघ शिक्षा वर्गों के बौद्धिक वर्गों में अंतर्निहित है, जो लगभग बीस वर्षों तक उनके द्वारा दिए गए भाषणों में बिखरा पड़ा है तथा इनमें से अधिकांश अनुपलब्ध हैं। राष्ट्रधर्म, पांचजन्य एवं ऑर्गेनाइजर के आलेखों में इसकी पृष्ठभूमि है।

भारतीय स्वातंत्र्य के पश्चात् देश में व्याप्त वैचारिक परावलम्बिता की पीड़ा उनके लिए असह्य थी। इसी वेदना में उनका चिंतन प्रस्फुटित हुआ था। इस संदर्भ में अपनी तीव्र अनुभूतियों को व्यक्त करते हुए वे अपने 'सिद्धांत और नीति; प्रलेख में लिखते हैं : "राष्ट्र की सुनिश्चित व सुनियोजित दिशा में प्रगति करने के स्थान पर, शासक और शासित विभ्रम और विरक्ति के शिकार बनकर, किंकर्तव्यविमूढ हो, प्रवाहपतित से चलते दिखाई देते हैं। अनास्था और आत्मविश्वासहीनता की यह अवस्था राष्ट्र के अस्तित्व और अस्मिता के लिए संकटपूर्ण एवं आशोभनीय है। इसे बदलकर देश के पुरूषार्थ को सचेत करना होगा।"

"वर्तमान परिस्थिति का सबसे प्रमुख कारण राष्ट्रजीवन का साक्षात्कार न करते हुए, उसके ऊपर विदेशी और विजातीय विचारधाराओं तथा जीवनमूल्यों को थोपने का प्रयत्न है। शीघ्र उन्नति की आतुरता में दूसरे देशों का अंधानुकरण करने और 'स्व' के तिरस्कार की वृति पैदा हुई है। इससे राष्ट्रमानस में कुण्ठा घर कर गई है।"

यही कुण्ठा वह चुनौती थी जिसने दीनदयाल के अंतर्निहित दार्शनिक को जगाया। उन्होंने एकात्म मानववाद का अमृत फल समाज को दे दिया।

वैचारिक पृष्ठभूमि

'एकात्म मानववाद' की पृष्ठभूमि के दो आयाम है; प्रथम पाश्चात्य जीवन दर्शन तथा द्वितीय भारतीय संस्कृति। 'मानववाद' मुख्यतः पाश्चात्य अवधारणा है तथा 'एकात्मता भारतीय । पाश्चात्य प्रयोगों में लौकिक जीवन का वैशिष्ट्य है। अतः कहा जा सकता है कि पाश्चात्य 'मानववाद' के भारतीयकरण की प्रक्रिया की फलश्रुति है-'एकात्म मानववाद' ।

सामान्यतः अपने विभिन्न लेखों व भाषणों में दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति का गौरवपूर्ण वर्णन किया है। लेकिन वे भारत की कमजोरियों के प्रति भी सचेत थे। एकांगिता, कालबाह्यता तथा निहित स्वार्थों के अपने रोग भारत को अंदर से खोखला कर रहे हैं, अतः सांस्कृतिक श्रेष्ठता के नाम पर यथास्थितिवाद के खिलाफ थे। वे लिखते हैं:

"हमने अपनी प्राचीन संस्कृति का विचार किया है, लेकिन हम कोई पुरातत्ववेत्ता नहीं हैं। हम किसी पुरातत्व संग्रहालय के संरक्षक बनकर नहीं बैठना चाहते। हमारा ध्येय संस्कृति का संरक्षण नहीं, अपितु उसे गति देकर सजीव व सक्षम बनाना है। हमें अनेक रूढ़ियां समाप्त करनी होंगी, बहुत से सुधार करने होंगे।... आज यदि समाज में छुआछूत और भेदभाव घर कर गए हैं, जिनके कारण लोग मानव को मानव समझकर नहीं चलते और जो राष्ट्र की एकता के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं, हम उनको समाप्त करेंगे।"

दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम की विकृति के प्रति सावधान थे, भारतीय संस्कृति के उपासक थे। उनकी भारतीय प्रकृति, समन्वय दृष्टि वाली थी, अतः न वे किसी विदेशी विचार को एकदम हेय मानते थे और न ही हर स्वदेशी चीज को वरेण्य । उनका सूत्र था, "हम मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें। इन तत्वों में जो हमारा है उसे युगानुकूल और जो बाहर का है उसे देशानुकूल ढालकर हम आगे चलने का विचार करें।" 'स्वदेशी को युगानुकूल व विदेशी को स्वदेशानुकूल' बनाने की अपनी मानसिकता के कारण उन्होंने कहा, "हम भारत को न तो किसी पुराने समय की प्रतिच्छाया बनाना चाहते हैं और न रूस या अमेरिका की अनुकृति।"

मुंबई के अपने ऐतिहासिक भाषण में जब उपाध्याय ने 'एकात्म मानववाद' की व्याख्या प्रस्तुत की, तब बहुत भावपूर्ण शब्दों में उन्होंने अपने व्याख्यान का समापन किया :

"विश्व का ज्ञान और आज तक की अपनी संपूर्ण परंपरा के आधार पर हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे, जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी अधिक गौरवशाली होगा, जिसमें जन्मा मानव अपने व्यक्ति का विकास करता हुआ, संपूर्ण मानवता ही नहीं, अपितु सृष्टि के साथ एकात्मता का साक्षात्कार कर 'नर से नारायण बनने में समर्थ हो सकेगा। यह हमारी संस्कृति का शाश्वत् दैवी और प्रवाहमान रूप है। चौराहे पर खड़े विश्व मानव के लिए यही हमारा दिग्दर्शन है। भगवान हमें शक्ति दें कि हम इस कार्य में सफल हों, यही प्रार्थना है।"

"हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था का केंद्र 'मानव' होना चाहिए। जो यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे के न्याय के अनुसार समष्टि का जीवमान प्रतिनिधि एवं उसका उपकरण है। भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन हैं, साध्य नहीं। जिस व्यवस्था में, भिन्न रूचि लोक का विचार केवल एक औसत मानव अथवा शरीर, मन, बुद्धि व आत्मायुक्त अनेक ऐषणाओं से प्रेरित पुरुषार्थ चातुष्टयशील, पूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का ही विचार किया जाए, वह अधूरी है। हमारा आधार एकात्म मानव है, जो एकात्म समष्टियों का एक साथ प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखता है। एकात्म मानववाद के आधार पर हमें जीवन की सभी व्यवस्थाओं का विकास करना होगा।"

भारतीय जनसंघ के महामंत्री एवं अध्यक्ष

दिसम्बर 1951, कानपुर के प्रथम भारतीय जनसंघ के अधिवेशन से लेकर दिसम्बर 1967 के चौदहवें कालीकट अधिवेशन तक दीनदयाल जी लगातार भारतीय जनसंघ के महामंत्री रहे।

जनसंघ के अधिवेशन, आंदोलन, अभ्यासवर्ग तथा प्रस्ताव आदि सभी कुछ दीनदयाल उपाध्याय के व्यक्तित्व से आप्लावित थे। देश में चलने वाला उनका अखंड प्रवास देशभर के कार्यकर्ताओं के लिए उन्हें सुलभ बनाता था। अधिवेशन में प्रस्तुत की जाने वाली उनकी महामंत्री रिपोर्ट केवल एक औपचारिक आंकड़ों का प्रतिवेदन नहीं वरन संगठन की गतिशीलता का एक उत्साही एवं आत्मालोची आह्वान होता था। महामंत्री का प्रतिवेदन जनसंघ की विकास यात्रा को बेबाक प्रस्तुत करने वाला साहित्य है। ये महामंत्री प्रतिवेदन केवल जनसंघ की गतिविधियों के दस्तावेज ही नहीं वरन राष्ट्रीय घटनाचक्र की डायरी भी हैं। वर्ष 1957, 1962 तथा 1967 के महानिर्वाचनों के महामंत्री प्रतिवेदन तो किसी विश्वविद्यालयीन शोध प्रकल्प के उच्चस्तरीय अकादमिक अध्ययन द्वारा प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध सरीखी पुस्तिकाएं हैं। इनमें राजनीतिक स्थिति, दलों की राजनीतिक एवं सांख्यिक निष्पत्तियां, घटनाचक्र पर विभिन्न टिप्पणियां, सर्वांगपूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक संकलन किया गया है। किसी भी इतिहासशोधक के लिए ये दस्तावेज अमूल्य निधि सिद्ध हो सकते हैं। ये प्रतिवेदन राजनीतिक कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शक सिद्धांतों की पंजिकाएं भी हैं। उनके नेतृत्व में जनसंघ का मत प्रतिशत हर चुनाव में बढ़ा विधानसभाओं एवं संसद में भी जनसंघ के प्रतिनिधित्व बढ़ता ही रहा। कालीकट अधिवेशन में पार्टी ने उन्हें अध्यक्ष चुन लिया। दीनदयाल जी विख्यात हो गये, नजर लग गई। सन् 1967 के ऐतिहासिक कालीकट अधिवेशन में दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इस अंधिवेशन में दीनदयाल तथा जनसंघ, दोनों ही अपनी प्रतिष्ठा व प्रभाव के शीर्ष पर थे।

दिनांक 29, 30 व 31 दिसम्बर 1967 को जनसंघ का 14वां अधिवेशन उपाध्याय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। 10 फरवरी, अद्धरात्रि में मुगलसराय स्टेशन पर उनकी हत्या हो गई। दीनदयाल केवल 44 दिन भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे। इन 44 दिनों में उनके द्वारा किया गया सबसे महत्वपूर्ण कार्य था, जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते उनका वह भाषण जो जनसंघ, संघ तथा दीनदयाल के तब तक के चिंतन के नवनीत स्वरूप अध्ययित किया जा सकता है। हर भाषण एक काल विशेष की खास परिस्थिति में ही दिया जाता है। सन् 1967 के चुनावों की परिवर्तित परिस्थिति उपाध्याय के इस विवेचन की पृष्ठभूमि थी।

उपाध्याय आजादी के बाद संपन्न हुए सामाजिक-राजनीतिक प्रयत्नों का परिणाम यह मानते थे कि "सामान्य जन में राजनीतिक चेतना का जागरण इस युग की सबसे बड़ी देन है।" उन्होंने कहा, "तात्कालिक राजनीतिक लाभों के लिए उसे साधन बनाना अच्छी बात नहीं है।" वह उनका कालजयी भाषण है, जो युगों तक भारत की राजनीति का मार्गदर्शन कर सकता है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय का महाप्रयाण राष्ट्रीय जीवन में प्रचारक

पं. दीनदयाल उपाध्याय 1937 से 1968 तक भारत के राष्ट्रजीवन में सक्रिय रहे। वे 1937 में संघ के संपर्क में आए, 5 वर्ष वे स्थानीय कार्यकर्ता के नाते दायित्व निर्वहन करते रहे। सन् 1942 में वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जीवनव्रती प्रचारक बने तथा 1951 तक वह उत्तर प्रदेश में प्रत्यक्ष संघ कार्य का दायित्व वहन करते रहे। उनके इस नौ वर्षीय कार्यकाल ने उनकी सांगठनिक एवं साहित्यिक प्रतिभा को प्रखरता से रेखांकित किया। सन् 1951 से 1967 तक 16 वर्ष वे भारतीय जनसंघ के महामंत्री रहे। उन्होंने एक सांगोपांग राष्ट्रीय नायकत्व का निर्वहन किया। यह परिपक्व नायकत्व जब भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष के रूप में रेखांकित हुआ, नियति ने रहस्यपूर्ण एवं निर्मम तरीके से उनकी जीवनरेखा को काट दिया, वे केवल 44 दिन, 29 दिसम्बर, 1967 से 10 फरवरी, 1968 तक भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे।

11 फरवरी, 1968 प्रातःकाल लगभग पौने चार बजे मुगलसराय स्टेशन के लीवर मैन ने टेलीफोन पर सहायक स्टेशन मास्टर को सूचना दी कि स्टेशन से लगभग 150 गज. पहले. लाइन. से. दक्षिण की ओर. बिजली के खंभा नं. 1276 के नजदीक एक लाश कंकड़ों पर पड़ी हुई है। पुलिस के सिपाही निगरानी के लिए ड्यूटी पर तैनात कर दिए गए। सहायक स्टेशन मास्टर ने जो मेमो पुलिस को भेजा, उस पर लिखा था 'आलमोस्ट डेड' | प्रातःकाल डॉक्टर ने परीक्षण कर उसे पूर्णतः मृत घोषित कर दिया। जब शव प्लेटफार्म पर लाकर रखा गया, उत्सुकतावश लोगों की भीड़ जुटी। अभी तक यह शव लावारिस था। भीड़ में अचानक एक व्यक्ति चिल्लाया "अरे, यह तो भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष पं. दीनदयाल उपाध्याय हैं"। विद्युत तरंग की तरह यह समाचार फैल गया और विषाद छा गया।

फरवरी माह में संसद का बजट सत्र प्रारम्भ होता है। 11 फरवरी, 1968 को भारतीय जनसंघ के संसदीय दल की बैठक दिल्ली में थी, नवनिर्वाचित अध्यक्ष पहली बार संसदीय दल की बैठक में शामिल होने वाले थे। 10 फरवरी को दीनदयाल लखनऊ में थे। प्रातःकाल दीनदयाल के पास पटना से बिहार प्रदेश जनसंघ के संगठन मंत्री अश्विनी कुमार का फोन आया, उनका आग्रह था कि बजट सत्र में संसद तो लंबी चलेगी, अतः उन्होंने 11 फरवरी को पटना में संपन्न होने वाली बिहार प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में आने का आग्रह किया। दीनदयाल जी ने नवनिर्वाचित महामंत्री सुन्दर सिंह भंडारी से चर्चा कर दिनांक 11 फरवरी को दिल्ली जाने की बजाय पटना जाने का कार्यक्रम तय किया।

भारतीय जनसंघ के महामंत्री होते हुए भी दीनदयाल उपाध्याय रेल में तृतीय श्रेणी के डिब्बे में ही यात्रा करते थे तथा एक्सप्रेस ट्रेन की बजाय पैसेंजर ट्रेन में यात्रा करना उनकी प्राथमिकता होती थी। पैसेंजर ट्रेन में उनकी लिखने-पढ़ने का समय मिल जाता था, तथा छोटे-छोटे स्टेशनों पर भी कार्यकर्ताओं से मिलने का अवसर मिलता था। अध्यक्ष बनने के बाद सब लोगों ने मिलकर तय किया कि दीनदयाल जी को अब प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करनी चाहिए। अतः पठानकोट स्यालदह एक्सप्रेस से उनके लिए प्रथम श्रेणी का टिकट खरीदा गया। यह ट्रेन 10 फरवरी को सायंकाल 7 बजे लखनऊ से चलती थी। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन उप मुख्यमंत्री रामप्रकाश गुप्त, भारतीय जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष पीताम्बर दास उन्हें छोड़ने स्टेशन पर आए थे। उनका बिस्तर एवं पुस्तकों का झोला भी कम्पार्टमेंट में रख दिया गया था। गाड़ी रवाना हुई, उन्होंने हाथ जोड़कर सब से विदा ली। रात्रि में 12 बजे जौनपुर स्टेशन पर जौनपुर के राजा साहब के निजी सचिव कन्हैयालाल जी पंडित उनसे मिलने आए थे, उन्होंने दीनदयाल जी को राजासाहब का पत्र दिया। रात्रि में 12:12 पर गाड़ी जौनपुर से छूटी थी। गाड़ी मुगलसराय पहुंची। स्यालदह-पठानकोट एक्सप्रेस सीधी पटना नहीं जाती थी। यह गाड़ी रात्रि में 2:15 पर प्लेटफार्म नं. 1 पर पहुंची तो यह बोगी, जिसमें दीनदयाल यात्रा कर रहे थे, इस गाड़ी के डिब्बे से काटकर शटिंग करके दिल्ली-हावड़ा एक्सप्रेस में जोड़ दी गई, जो लगभग 2:50 बजे मुगलसराय से रवाना हुई। प्रातःकाल ट्रेन पटना पहुंची पर दीनदयाल जी इस ट्रेन में नहीं थे।

उधर, मुगलसराय में उनके शव को पहचान लिया गया था। परम पूजनीय श्री गुरुजी (मा. स. गोलवलकर) सहित सभी प्रासंगिक व्यक्तियों को सूचना मिल गई थी। दिल्ली में संसदीय दल की बैठक चल रही थी। बैठक स्थगित कर सभी वरिष्ठ नेता विशेष विमान से वाराणसी पहुंचे, उनके पार्थिव शरीर को दिल्ली लाया गया। दीनदयाल जी दिल्ली में सांसद के नाते श्री अटल बिहारी वाजपेयी को प्राप्त आवास 30, राजेन्द्र प्रसाद मार्ग पर ठहरा करते थे। आज उसी आवास में उनकी निष्प्राण देह को लाया गया। देश के कोने-कोने से लोग दिल्ली पहुंचने लगे। श्री गुरुजी तो वाराणसी पहुंच गए थे। श्री गुरुजी एवं दीनदयाल जी के अनिर्वचनीय संबंध थे। श्री गुरुजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक ही नहीं वरन् एक महान आध्यात्मिक विभूति थे। दीनदयाल जी उनके अनुयायी थे लेकिन श्री गुरुजी का उनसे 'एक प्राण दो देह' सरीखा नाता था। सामान्यतः अविचलित रहने

वाले श्री गुरुजी जब दीनदयाल की पार्थिव देह के पास पहुंचे, आंखें छल-छला आई, भर्राये कंठ से वे बोले 'अरे, इसे क्या हो गया।

दीनदयाल जी का शव वायुयान में रखा गया, श्री गुरुजी वायुयान की सीढ़ियों पर चढ़ गए। उन्होंने अपने दोनों हाथ दीनदयाल जी के मुंह के ऊपर से लाते हुए अपने नेत्रों से लगाए। इस प्रकार उन्होंने तीन बार किया, विषाद भरे शब्दों में कहा "बहुत से लोग अपने परिवार चलाते हैं, अतः वे कल्पना कर सकते हैं। मैं परिवार नहीं चलाता, इसलिए मेरी जो दुःख की भावना है वह शतगुणित अधिक है। इसलिए व्यक्तिशः उनके संबंध में कुछ नहीं कहूंगा। इतना ही कहूंगा, दीनदयाल को ईश्वर ने ले लिया। एक पुरानी कहावत अंग्रेजी में पढ़ी थी-"जिन्हें देवता प्रेम करते हैं, वे कम उम्र में स्वर्ग सिधार जाते हैं।"

इधर दिल्ली शोक में डूब गई थी। बाजार बंद, दफ्तर बंद, 30, राजेन्द्र प्रसाद रोड की तरफ लोग बढ़े चले जा रहे थे। पुलिस की तथा स्वयंसेवकों को व्यवस्था करने में कठिनाई हुई। भीड़ पर भीड़ उमड़ रही थी। पुष्प वर्षा, माल्यार्पण, भावभीनी श्रद्धांजलि और रूदन–सिसकियों का क्रम जारी था। इस वज्रपात ने सभी को किंकर्तव्यविमूढ़ कर दिया था। कौन है वह हत्यारा, जिसने इस ऋषितुल्य अजातशत्रु के प्राण हर लिए, उनके पावन शरीर को यातनापूर्वक मरोड़ डाला? कौन देता जवाब, सभी तो मर्माहत थे।

12 फरवरी, प्रातःकाल भारत के महामहिम राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन श्रद्धांजलि अर्पित करने आए। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी तथा उपप्रधानमंत्री मोरारजी देसाई भी पुष्प-माला अर्पित करके गए। नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सांस्कृतिक विभूतियों का तांता लगा रहा। दिल्ली में अपनी श्रद्धा अर्पित करने जनसमुद्र उमड़ पड़ा।

मध्यान्ह एक बजे महामानव दीनदयाल की पार्थिव देह शव-रथ में रखी .. गई। महाप्रस्थान की तैयारी। चार अश्वारोही सिपाही शव यात्रा के आगे-आगे चल रहे थे। शव-रथ के आगे संघ-जनसंघ के वरिष्ठ अधिकारी चल रहे थे। मार्ग के दोनों ओर श्रद्धालु जनता अंतिम दर्शन एवं पुष्पार्पण के लिए उपस्थित थी। पीछे महिलाएं गायत्री मंत्र का जाप करती हुई चल रही थीं। श्रद्धांजलि पुष्पवर्षा के कारण मंथर गति से चलती हुई यह यात्रा सायं छ: बजे निगमबोध घाट पर पहुंची। सायं 6:45 पर अंतिम श्रद्धांजलि का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, 7 बजकर 6 मिनट पर मंत्रोच्चारण के बीच उनके ममेरे भाई श्री प्रभुदयाल शक्ल ने अग्नि प्रज्वलित की, 7 बजकर 23 मिनट पर कपालक्रिया हुई। दीनदयाल का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया।

संदर्भग्रन्थाः -

1. उ.प्र. संदेश सितम्बर 1991 पृष्ठ संख्या 40-65
2. भारत के वैभव का दीनदयाल मार्ग ह्य.ना.दी पृष्ठ संख्या 28-29
3. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनीतिक चिंतन पृष्ठ संख्या 29
4. पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन पृष्ठ संख्या 58
5. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनैतिक चिन्तन पृष्ठ संख्या 38
6. विजयवाड़ा अधिवेशन में दिया भाषण 1965
7. जनसंघ विशेषक आर्गनाइजर 1956
8. महेश चन्द शर्मा, दीनदयाल उपाध्यायः कर्तव्य एवं विचार, प्रभात पब्लिकेषन, नई दिल्ली, 1994, पृष्ठ 250-258
1. 9.दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, प्रभात पब्लिकेशन, 2016, पृष्ठ 80-82
9. शरत अनन्त कुलकर्णी, एकात्म अर्थनीति, सुरूचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ 10-15